

०

The Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashtra
Mitra
"Join the Jain
Religion
Member"

॥ आदरक्षानाशय-
॥ आद्या॥ श्रीनाथप
॥ व्रह्मनमश्रीधर
॥ गवतायनमः॥ श्रीनाथप
॥ हनिविजयग्रथ
॥ यनमः॥ श्रीनाथप
॥ मध्ययनमः॥ श्रीना

२
श्रीगणेशायनमः॥ श्रीदत्तात्रयायनमः॥ जयजंयश्रीहृष्णचंडारा॥ गोपि
नयनास्त्रोजविकारा॥ स्यशानाचिह्नकारां॥ गोकुलवास्यागोवींदा॥ १॥
जयजयश्रीहृष्णचंडारा॥ निजजनभानस्तचकोरचंडा॥ ब्रह्मानंदाशान
समुद्रा॥ मायातीताभनंता॥ २ जयजयक्षवहृदयाज्ञानंदकहा॥ व्रेमच
कलचातकजकहा॥ पुणीनिंदा॥ उपसुन्नतहा॥ ३॥ क्षेत्रक्षेत्रहतीतांतुं॥ ३॥ जयजय
मायाविदिपादहना॥ मंधुकेटक
दिना॥ धर्मपालकासहुणवर्धना
सच्चिदानन्दपेरशा॥ ४॥ जयजय
मवनाभाकमक्षेत्रपत्राशा॥ मनमाह
नानिविकल्पदृशा॥ मायाचत्राक्षेत्रपत्राशा॥ दानवस्त्रिश्वाकारणा
॥ ५॥ घड्डुणेष्ट्यसंपत्ता॥ यशाश्रिकितिभेदार्थविज्ञान॥ जयज्ञारिष्ठड
वर्गमिदक्षंजना॥ निराजनानिरकृपाधिका॥ ६॥ हरिभनंतशायीभनं
तां॥ युठेष्ट्यबोलेहरिविजेयंगंथा॥ उंझीलिलाजंगन्नथा॥ उंचबोलेसर्वहि॥ ७॥

Shodhan Mandal, Dhule and the ashram
of the Raichade Sants
"Jyotirshilpi" - Chavhan Pimpri Chinchwad
"Jyotirshilpi" - Chavhan Pimpri Chinchwad
"Jyotirshilpi" - Chavhan Pimpri Chinchwad

तीसेरज्ञाध्याईनिरेपण ॥ गोकुलिंगेलामनमोहन ॥ वसुदेवासीभाडवे
विद्र ॥ मायांजाकैपैंजाले ॥ ८ ॥ धरितांस्वत्तपांतुसंधान ॥ भाडवेयेतमा
याविद्र ॥ तैसाहनिउदरोयेउन ॥ वसुदेववाघलामायेन ॥ ९ ॥ साधकांजा
स्वत्तपत्रापि होत ॥ तोसिद्धितुटेभाडविषेत ॥ न्निद्धीसंगेपरमार्थ ॥ सर्व
जातोंहतिचा ॥ १० ॥ न्निद्धिपाटि जोलाग आ ॥ तोदिवसाचेनिलागला ॥
आसन्नापितयाला ॥ कल्पति ॥ च ॥ ११ ॥ देवोचंबापाचंपाइव
हिली ॥ मायेनबडिगकिलि ॥ रजिवसककिलि ॥ सुक्लकेसंहा
तीपां ॥ १२ ॥ एन्निदुर्धरहरिचिमावा ॥ तिसकंसंगेलाभापटावया ॥
तवतेंगेलीनीटुनियां ॥ नयभायांसुरवरा ॥ १३ ॥ ब्रह्मादिकापउलेंमा
याआटक ॥ तथेकंसकायमझ्येक ॥ लागलाकंसासिधाक ॥ निन्निदिव
सस्मरेना ॥ १४ ॥ जवलिंगधानकारभारि ॥ केसधोवेतयावरि ॥ भारं



जोलाग
जोलाग
संगेला
गला

छुम्हीमाझेंभानि॥ मजमात्रं पाहातो॥ १५॥ क्षोवेतं सेवका चंभार॥

(3) तों हांकफोडिकंसाल्सुर॥ महेंज्यावधेच्चहोवंदार॥ मजमेवते मिळा
ले॥ १६॥ जासोज्यांतागकुछिचक्रपाणी॥ पुहुडलायशादंचंशय
नी॥ जागीजालीनंदराणी॥ निजनयनिभावलकी॥ १७॥ येशोदा
२॥ केवल इशानकठा॥ हनिक्राएजालीतीजला॥ सायासनकरितांभा
ला॥ घराभापणगाविदं॥ शादंचंभाग्यविशेष॥ कवडि॥ २
देउनीघेतलापरिस्॥ काडा ल्पटह्य॥ हाताभालानिजभा
र्ज्यें॥ १८॥ घेनुदेउनिघेतलाज्ञान्त॥ किं अजापालेटेरावत॥ जं
बुकदउनियेथार्थ॥ सिल्वेघरास्तिभाणीला॥ २०॥ टेकंचितांमणी
गोफणिला॥ तोयेउनआगणांतपडला॥ तेसोयशादस्तिलाभजाला
घराभालाश्रीहरि॥ २१॥ येशोदाबैस्तलिभेदन॥ तोसेजंदनवीलं

निधान ॥ जामलदलराजिवनयन ॥ मोहिलेंमनयेंरोद्देचं ॥ २२ ॥ हसे
 वरिसुरवकरनी ॥ आपुलेंचरणीचाजायुष्टधननि ॥ घालीआपुलेंवदनी
 तेंजसदनीनसमायें ॥ २३ ॥ येवोदेसिपुत्रजालाक्षणुनि ॥ धांवतिरोहि
 णीजाणीगौचणी ॥ अनंदनमायचिकुननि ॥ धंन्येनाणीनंदाचि ॥ २४ ॥
 द्वारिमंडपउकेलं ॥ समस्तवासाजवलिआलं ॥ कुकीचाउपाध्या
 तेवेळं ॥ गंगसुनिधांविनाला ॥ २५ ॥ गुविजावतरलाश्रीहनि ॥ वादेवा
 जतिज्ञातिगजनि ॥ वाटिजालीन ॥ २६ ॥ इवजावरिंपाहाति ॥ २७ ॥
 नंदेकरनिमंगवस्नान ॥ पाहाता॒ललापुत्रवदुन ॥ गंगजादिकरनि
 ब्रह्मण ॥ त्रिकालशानीपातलें ॥ २८ ॥ कननियापुन्याहवचन ॥ मगपा
 हंद्युविंदुसुरवीघालुन ॥ तोराविलाजगदासां ॥ २९ ॥
 श्रीवास्तुदवाच्चवदुन ॥ पाहातांनंदभनंदघन ॥ नानापन्दिचीदिव्यरत्नं

"Sanskrit Manuscript of the Ratnadev Sanskriti Mandai, Dhule and
 Chhatrapati Shivaji Maharaj Sanskrit Pratisthan, Mumbai"

(5A)

माहाचक्चाळकचक्रपाणी ॥ मोहिलज्वावध्यागौलणि ॥ यासथोरयेमु
 नाजिवनि माहासर्पभयआहे ॥ ५२ ॥ तेथेंविजंइहोईलजोपेंभाप ॥ अ
 णिकयास्मिगिलत्तर्प ॥ परितेथेंहियाचावताप ॥ विशेषवाठेंलज
 ॥ न नियं ॥ ५३ ॥ द्वादशायोजनमाहाभाग ॥ यास्मिलहानलागतांक्षण
 माहापर्वतउचलुन ॥ नरवयीचधरितहा ॥ ५४ ॥ गोरक्षणकरिलहा
 मोतें ॥ कंसासम्बद्धयाचेंहोत ॥ लकडारिलसर्वदत्यातें ॥ बंदिचिस
 मस्तेंसोडविल ॥ ५५ ॥ उत्तरफुक्त ॥ लासन्तुनि ॥ तेंसुन्हादैलजोगाणन्ति
 समुद्रातयेकपदुन ॥ नवचीरचिलजाहुत ॥ ५६ ॥ माहादेससव्हास
 नि ॥ वरिलमुरवेपदुराणी ॥ आणीक साकासहस्रजणि ॥ येक
 हचिपरणील ॥ ५७ ॥ शोडवासहस्रवेकशात ॥ आणीरवजावज
 णीविरव्यात ॥ संततीवाठेलजापरमित ॥ नाहिआतनिजभाग्या ॥ ५८

(6)

योईलभक्ताचाकेवान् ॥ उतरिलधरयिचासर्वमान् ॥ याचिलिलागातां
सर्वत्र ॥ ब्राणीतरति त्रिमुवनिचं ॥ ५९ ॥ धर्मधर्मिंचीउछिएप्रेरी
काटिलभक्तीनेहाश्रिपती ॥ होईलभक्ताचास्त्रथी ॥ लजनीतिधरि
ना ॥ ६० ॥ दिवसेदिवसलिलान्तत्रि ॥ दविलगतीचित्रविचित्र ॥ नि
जधामाजातांसर्वगोत्र ॥ समग्रमें उहा ॥ ६१ ॥ ऐसेजातकटक
तांश्रवणी ॥ तठस्तजालीनदन ॥ तोस्तनपानकनितांचक्रपाणी
परतोनपोहुंदिजाकेडं ॥ ६२ ॥ मे लभागीतलीसर्वत्र ॥ म्हणा
निहस्त्येकनिराजिवनेत्र ॥ जाव्रस्तानंदसर्वस्वद् ॥ लिलाकेतुकहावी
तां ॥ ६३ ॥ बारादिवस्यपरियेत ॥ सोहकाहातसंबाहुत ॥ नंदद्रव्यं
आपमीत ॥ वाटितांजालाविभ्रातेधवा ॥ ६४ ॥ तरावंदिवसीपाछना०
पहुडविलावकुंठिचारणा ॥ श्रीघष्ठाहेनामजाणा ॥ गँगन्धिपिलेजाणोनि



(6A)

करितानानासाधना ॥ नद्यवस्थादिकांच्याध्याना ॥ स्वासीघालुनपा
 क्षेन ॥ जोजोमहणउनिहालविति ॥ ८६ ॥ वेदशास्त्रानयभाया ॥
 क्षेग्रजालाहरिचिशया ॥ तोंपावपानिजउनीयां ॥ लीलाहविभता
 तं ॥ ८७ ॥ जोपयाबिधिहृदयिचनिवासि ॥ पश्चावस्पदपश्चासि ॥ उर
 गरिपुवहनज्यानी ॥ पाठः ॥ हुडविलं ॥ ८८ ॥ जबजनाम
 जबजलोचन ॥ जबधीशायि ॥ ८९ ॥ जयविजयकरजेषुन
 द्वादिउमेजयाच्या ॥ ९० ॥ र. ३८५ कुमार ॥ हृष्टिचिंतीतीनि
 रंतर ॥ जेजनमथद्रातुंचध्यवसाचर ॥ नरदादिकउहजकं ॥ ९१ ॥
 जेमुक्तजादिमायंते ॥ जेपक्कफळनिगमवल्लिचं ॥ जेदवार्चनकम
 शादभवाचं ॥ तंपावन्यातरवल्लत ॥ ९२ ॥ जोवीद्युजनमानस्मंरात्र
 जोवकुटिचावल्लहाल ॥ निजमकवरदतमालनिल ॥ तोपहुडलापाळन्यात ॥ ९३ ॥

आदी
६॥

(८)
जो अनंत स गुण स पन्न ॥ अनंते ने त्रिअनंत वहन ॥ अनंत वा हु अनंत च
रण ॥ तो जो जो महण उनि हाल विति ॥ ७३ ॥ जो अलक्ष आपरापर
जो आदि माय चानि जवर ॥ जो त्रिसुवनि चाव्याधार ॥ जो वंचनि ग
मागमा ॥ ७४ ॥ जो विराट दुक्षा च मुख विज ॥ जो योगी याचं विश्रांते स
ज जो ब्रह्मावचं निज ते पाठन पुहुडला ॥ ७५ ॥ जो वेद विद्या
च व दिन कर ॥ जो ब्रह्म उडन पत्रमध्यार ॥ जो दात्रवत्य मरवत
पथि र ॥ पाठन्यात तों पुहुडल दी लाशान्त मुज छेद क पंचानन ॥ ८६ ॥
जो माय आधार विपीन दहन ॥ जो त्रिपर्व आनंद वायं करुण ॥ ब्रंश परि
एर्ष श्री दलस्था ॥ ७७ ॥ पाठन्याक्षावत्यासुवा स्मि नि ॥ चांति द्वय मांदया
उन्ननि ॥ उपरि तीस्त्रिद्वया कामीणि ॥ जो जो रावद हाल विति ॥
७८ ॥ निर्वाण दि इष्य विति ह्या ॥ स्वत्तपन्नि मुमुक्षा ॥ निष्क्रम

With Profound敬
the Religious Sanskrit
of Mandai, Dhule and the
Shivaji Bhawan
of Maharashtra

मात्रतिति ॥ सुलिनतां समधीनहति ॥ लिलागातीत्वान्दें ॥ ७९ ॥
 परापर्यंतिमध्यमावैरवरि ॥ गजेरंगातीत्वाहिनारि ॥ त्वाहिसु
 किनिधारि ॥ चहुकोनितटस्त ॥ ८० ॥ घरातमुंरव्यज्यासुंदरी ॥
 तराबैसल्याबाहुरि ॥ जामटतोउषारिनारि ॥ यात्तहरिदित्तनां ॥
 ॥ ८१ ॥ आन्संकावनाविपरितमावन ॥ विश्वीप्रयोगतायत्तजाणा
 दुंर्धिवीशाहणपण ॥ जामटतोसंबहुतमि ॥ ८२ ॥ बानासोआ
 चौहानारि ॥ गल्बलाकरिति बाहुरि ॥ चान्तस्त्वीहवीतिक्षुकुप
 रि ॥ परिजंतरिप्रवशनह ॥ ८३ ॥ आन्ताजातांसकचनितीविणी
 वादियशाद्विभृतनी ॥ आकंकारवस्त्रेंज्यापुणी ॥ सूहनाजापुल्या
 गोलिया ॥ ८४ ॥ वस्त्रेमुपणदउनजाण ॥ नंदबोलविलेंब्राल्यण
 गर्गगोरविलोंसंपुणी ॥ वस्त्राभारणीतेधवं ॥ ८५ ॥ गोकुछिं

Pajawade Say Mandai, Dhule and Nashwan Chiplur Sheth, Nagpur

आवतरतां गोपाल ॥ सकल दृष्टसदाफल ॥ घेनुहु भती त्रीकाळ ॥
दुग्धतुंबल वर्षती ॥ ८६ ॥ जाधी व्याधि रहित लाक ॥ नाहिं चितां इरि
द्रुतव ॥ दृष्टाधरणी त्रीभूपारपिक ॥ पिकाल गलं तद्वां ॥ ८७ ॥
आवतरतां चिरमारमण ॥ ज्ञान जनहित जालं तन्त्रण ॥ विकल्पपा
पसमुक्ति हुन ॥ देश धडिजाहाल ॥ ८८ ॥ दरिहि तं जालं साग्रेयं वंत ॥
भुरवेतं होती बाल कं पंडित ॥ जालं रूप वंत ॥ देहि प्य मानते
जन्स्वी ॥ ८९ ॥ आवतरतां श्रीहरि रवैश्व ॥ निरोष गलं रजतम ॥
गौचियां सुकाळ परम ॥ स्वानं दाचा जाहाला ॥ ९० ॥ गहि प्रकाशत प्र
भासकर ॥ मगके चाउरे लब्धांधार ॥ गहि स्वामियतात् सकर ॥ पलु
नजाती चुहु केडँ ॥ ९१ ॥ किं बोलतां शानवदात ॥ सकलु मंतं हानि कुणि
त ॥ किं राबिदि विवेक होतां प्रास ॥ संसारदुःखविवलं ॥ ९२ ॥

Digitized by srujanika@gmail.com

किं व्रेव रातो वैराग्यशाती ॥ दृष्टकमक्रोधपति ॥ तेसा आवंतन्तो कमाक
 पति ॥ दोशादुषकाळपठोऽ ॥ १३ ॥ आस्ताइकेऽमथुरं वती ॥ दुश्चिनं कंसा
 सीजाणवती ॥ राजद्वारिशुनिरुडती ॥ विजापउतिसमंवरि ॥ १४ ॥ माहा
 स्फोटे हेऽनिघरा ॥ क्षणाक्षया कंपथरवरा ॥ मेघमंडलनस्तां धारा ॥
 श्रोणीतां चिवर्षेती ॥ १५ ॥ कंसरसोमसीतालीला ॥ उगचमुगुटवलं पडला
 गलीसक्षेचिसर्वकला ॥ व्रावर् ॥ विसति १६ ॥ जाषुलशिरितेल
 रोडुर ॥ स्वप्रीदरवकंसा सुर ॥ भितां चें घुघाटें स्वर ॥ दिवसाची
 कंसज्ञाइके ॥ १७ ॥ उगचमुट ॥ पडले ॥ कंसासीवोटेमरणजा
 ले ॥ कंसरत्रीयानीस्वप्रेदरिवेले ॥ माहादुश्चिरुक्तहात्तण ॥ १८ ॥ विगत
 विद्यवास्त्रीयास्वप्रकालि ॥ वोटिकरितीघुतनीघुलि ॥ मंगलसुत्रगक
 सरितोडिलि ॥ काछपुरुषं आकर्मात ॥ १९ ॥ नानाविद्रुदरवानि कं
 सकरयापीतमनी ॥ सदाजावीचितांगी ॥ कदाचायनिनिजनयं ॥ २० ॥

"Joint Project of the Rajaivade Sanskriti Shodhan Mandal, Pune and the Vashim Peeth, Vashim, Mumbai"

ब्रह्मानासि कं सविचार करि ॥ जामुचा वैरिउविवरि ॥ जावतारलापरि
निधीरि ॥ ददिनपेडेशोधितां ॥ ७१ ॥ कोन्हेगमीकोन्हेघरि ॥ वाढतां
नक्केलं माशा वैरि ॥ जोटां ईपाडिल निधारि ॥ यासीईछीले देइनमीं
॥ ७२ ॥ शातुजो लाहूण आहे ॥ तोवर्ग कनावां याचाशय ॥ दं हसुक लाहूण
खणानयं ॥ देवतां चिमाराव तेधकं ॥ ७३ ॥ ब्रह्मामाजी किचित आ
ग्र ॥ तोजाली लन लागतां द्युष ॥ जारजो नपेडेमाझुन ॥ तव बाहेर अ
धिचहोवं पै ॥ ७४ ॥ शास्त्राचं जानपेड ॥ तोजाधिचवोडण करा
वं पुढे ॥ तेस्या शातुं जोनवाडे ॥ शास्त्राधिचघातयोजावा ॥ ७५ ॥ ब्र
धानम्हणती तेवळे ॥ जनवं नीटेन्सि आईकिलि ॥ वैरिवाढतां
गोकुलि ॥ गोछीयां घरिखणानीयां ॥ ७६ ॥ लक्षानुं लक्षगौछिणि
गोकुलि जास्तीं बागतीनि ॥ वैरिजन्सं कायं सदनी ॥ तोचठां ईपाडावे ॥ ७७

(9)

८ ॥

॥ ८ ॥

कापट्येवेति देशवरवा ॥ घूर्तताकिक पाटवाव ॥ अस्त्रिष्ठाई पाडुन
 वधाव ॥ नानाउपयेंकन्तनिया ॥ १०८ ॥ तोमहाबुद्धेत्यनामं ॥ तोकंसा
 स्पैजबोलत ॥ मिंवित्रहोउनीयांवरित ॥ पालतिधेंतंगोकुठि ॥
 ॥ १०९ ॥ कंसबहुतरातोषला ॥ माहावृष्टदयगारविला ॥ तणंतकाचिध-
 रिला ॥ वित्रवशकपूर्वये ॥ १०० ॥ घातकवात्रेनसला ॥ यशापवितत्
 लेंगला ॥ कापट्येंव्येशभावल ॥ हतिपंचागधेतलं ॥ १११ ॥ घात-
 वेलिसरस्वावी ॥ टिक्केवाटनि लाकाहवि ॥ मित्राह्यणोहलटिकेचि
 मिरवि ॥ परिभांतरिकापट्य ॥ ११२ ॥ लटकाचिहावीभाचार ॥ परिं
 अंतरिदुराचार ॥ वदावनफकवरिचसुंदर ॥ अंतरिकाछकुटमरलं
 ॥ ११३ ॥ जन्सेवगाच्चशुष्कध्यान ॥ लुबधाचतसृशान ॥ किंदमिकाचेष्ट-
 जन ॥ वरिवरिहविभास्य ॥ ११४ ॥ स्त्रीलपटचंविरक्तपण ॥ किंवर्ता-

(११)

४५

(१०)

चेंमुरवमंडण कोळ्हाटियोचेसुरतपुर्ण वरिवरिव्यथपैं ११६

विश्वासघातक्याचेवोल वरिवरिदिसतिरसाळ मैदाचिवांतीनि
मैव वरिवरिव्यथपैं ११७ तैसातोंदेयमहाबल वरिवरिजाला
सुन्तिक घ्रेवंशताजाला गोदुरु घुरकुटिकदुरासा ११८

पुत्सेंलोकासकवा कोळ्हान्चंघरि हालासाहवा तौतंसागतीशी

घव्याभावतरुला नंचार्च ११९ हरिवंशासागवती
पाहि हेमहाबलविप्राचिकथ १२० ज्ञाधकरितांसर्वाटाई ना

रदुराणीदेविलि ११९ ते १२० गुशालीहिलीजाण ओतीनध

रावाजानुमान मुछिवंगलीकथापुर्ण सहसाहिवोठंना १२०

नानाएराणिचेंईतिहस बोलीलास्वामीवेदव्यास यालागीक
दापिदेशा नेटवावाग्रंथातं १२१ आसांतांधूर्तमहाबलदेय
विष्र घ्रेवंशालानंदाचेंमंदिर गोचिकरितीनमस्कार भोवंकरनीविष्रोतं १२२

९

११



वैसावयादिघलेंजासन ॥ केलें ब्राह्मणाचेपुजन ॥ येशोंहाश्रीहृष्णं ।
 सीजाण ॥ रत्नपानकरवित ॥ २३ ॥ येशोंहाश्येषाब्राह्मणासी ॥ अम
 ग्रहपाहाश्रीहृष्णासि ॥ जन्मकाळीचिह्नाके न्सि ॥ तंभास्यासि
 न्यागीजें ॥ १२४ ॥ पुर्विगगेकिले जातक ॥ परमकल्याणसुमन्तुच
 क ॥ उंसीन्यागावंसमाक ॥ हरापाहानिहृष्णासि ॥ १२५ ॥ तवतों
 कापठयेंकरण ॥ यंचगराहेंउकड़ ॥ हृष्णयेकग्रीवाउंकाउन ॥
 संगतांजालोतधवां ॥ १२६ ॥ गर्गदिकरोषस्वर सकव्यु
 कलेंछुणाकार ॥ सवचिंमुक्ति साचार ॥ हृष्णउपजलाजाणपा
 ॥ १२७ ॥ यासीउपजतांलागलमुक्त ॥ हाकरिलसवाचनिरुक्त
 याचंपायेंगाकुल ॥ निरुक्तिलसर्वहि ॥ १२८ ॥ हाउपजलाहेमुक्ति
 कनिलस्वर्गोत्ताचिह्नालि ॥ तरितुम्हिसकव्यमिलुंनगौक्ति ॥ लेकर्तं



"Portrait of Vyasa, the author of the Mahabharata, shown in his hermitage at Chavand Piplala, near Mandai, Dhule and the Rashwadeo Chavand Piplala, Maharashtra, India."

वाहेरदाकाहे ॥ १२९ ॥ गर्तमाजीनेउंनी ॥ जीतचिपुरोवंयेष्ट्यणि ॥
तरिचकल्याणतुष्टागुणी ॥ निश्चयेत्तीजापि जे ॥ १३० ॥
बालनहुं हाकाळ ॥ गिल्लतुमचेंसकलकुळ ॥ टेसेअकतां
वेकुंठपाळ ॥ कायेचरित्रमांडिल ॥ १३१ ॥ जोनकवचराचरव्या
पक ॥ जोमायाचक्रपालक ॥ जगहुचिपटुसुनव ॥ परितंतुश्री
स्थष्टा ॥ १३२ ॥ नानापरिन्
मणि ॥ परिवाविलंयकानं
छणी ॥ किंबानेकतरंगसिं
हि ॥ परिउदकनिर्धारे ॥ १३३
किंनानाघटियकदिनकरे ॥ एकवहुतभद्रियेकज्ञवंर ॥ किंय
कस्तुवर्णनानाभाळकार ॥ तेसाव्यापक श्रीदृष्टा ॥ १३४ ॥ किं
नानाभाटकांचाउंचार ॥ परिखांतयेकचिभोंकार ॥ तेसाव्यपक ॥
नानाघटोचंविकार ॥ परिम्बितिकायेकचि ॥ १३५ ॥ तेसाश्रीदृष्टा



Digitized by srujanika@gmail.com



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com